described by Lord Krishna in the holy Gita.

अदेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च ।
निर्ममो निरहंकारः समदुःखसुखः क्षमी ।।

संतुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढ़निश्चयः ।
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्यो मद्भक्तः स मे प्रियः।।

That means, one who is not envious but is a kindly friend to all creatures.... (*interruption*)

उपसभापति : मिश्रा जी आप क्या पढ़ रहे हैं ?

SHRI SHIV PRATAP MISHRA : It is a Special Mention which is permitted by you. It is you who allowed me to speak in this august House.

THE DEPUTY CHAIRMAN : What are you reading, Mr. Mishra ?

SHRI SHIV PRATAP MISHRA : On the centenary celebrations of Shri Chandrasekharendra Saraswati Mahaswami of Kanchi Kam Koti Peetham. (*interruption*).....I am concluding.. ...(*interruption*).....One minute.

THE DEPUTY CHAIRMAN : Not even one minute.

SHRI SHIV PRATAP MISHRA : I am concluding in one minute because I have to pay my respects again to the great Guru and to Shri Jayendra Saraswati Swamigal and Shri Vijayendra Saraswati Swamigal.

THE DEPUTY CHAIRMAN : To whom you pay your respects is your personal matter. Now, Shankar Dayal Singhji.

Failure of Microphone System at National Film Awards Function

श्री शंकर दयाल सिंह (बिहार) : उपसभापति महोदया, पहले मेरे मित्रों से मुझे बचा लीजिये । (**व्यवधान**) मेरे मित्रों की इजाजत हो तो मैं कुछ कहूं ।

THE DEPUTY CHAIRMAN : Order in the House please (*interruption*).. Mr. Som Pal, if you want to discuss something, you can please go to the Lobby and have a discussion and don't put your back to the Chair which is not proper.

SHRI SOM PAL (Uttar Pradesh) : Madam, I am sorry.

THE DEPUTY CHAIRMAN : If you have anything serious to discuss, please do discuss but let the Members speak. Shankar Dayal Singhji, I again remind you of the direction I had given about the Special Mention.

श्री शंकर दयाल सिंह : उपसभापति महोदया, यहां 40वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार वितरण समारोह में घोर अव्यवस्था के कारण ध्वनि प्रसारण व्यवस्था टूट जाना, माइक्रोफोन का फेल होना तथा राष्ट्रपति द्वारा बिना भाषण दिये समारोह से चले आना, यह गंभीर मामला है । मैं इस संबंध में अपनी ओर से कुछ नहीं कह कर देश के प्रतिष्ठित समाचार-पत्रों ने अपनी संपादकीय टिप्पणियों में जो लिखा है, उसकी ओर सरकार का ध्यान दिलाना चाहता हूं । जनसत्ता ने लिखा है ·· (**व्यवधान**)

उपसभापति : जनसत्ता सभी ने पढ़ा होगा ।

I will not permit you to read from the newspapers because this is not the way to make a Special Mention.

श्री शंकर दयाल सिंह : जनसत्ता, नवभारत टाइम्स और हिन्दुस्तान, तीनों हिन्दी के बड़े प्रतिष्ठित पत्रों ने इसके बारे में जो लिखा है अगर सरकार इसको पढ़ ले तो सरकार को पता चलेगा कि कितनी शर्मनाक घटना हुई है । इस संबंध में ·· (**व्यवधान**)

श्रीमती कमला सिन्हा (बिहार) : अंग्रेजी समाचार पत्रों में भी ·· (**व्यवधान**)

श्री शंकर दयाल सिंह : मैडम, आपने अंग्रेजी समाचार-पत्र पढ़ा होगा । मैं तो अंग्रेजी कम जानता हूं, मैंने हिन्दी समाचार पत्र पढ़ा है **(व्यवधान)**

श्री मुफ्ती मुहम्मद सईद (उत्तर प्रदेश) : वो आपकी मदद कर रही हैं **(व्यवधान)**

श्री शंकर दयाल सिंह : बीच में बाधा उत्पन्न कर रही हैं **(व्यवधान)**

उपसभापति : शंकर दयाल जी को मदद की जरूरत नहीं होती **(व्यवधान)**

SHRI S. JAIPAL REDDY : (Andhra Pradesh) : Madam, I can assure you that the internal affairs of Janata Dal have always been external affairs of the country.

श्री शंकर दयाल सिंह: मैं यह पूछना चाहता हूं कि आखिर इस देश को हो क्या गया है ? मैडम, अंधी सरकार चल सकती है, लूली लंगड़ी सरकार भी चल सकती है पर बहरी सरकार नहीं चल सकती है क्योंकि सरकारी विभाग का एक प्रतिष्ठित समारोह चल रहा हो और यहां इतनी घोर अव्यवस्था हो जाए कि जिस समय राष्ट्रपति भाषण देने के लिए खड़े हों—वहां उस विभाग क मंत्री हैं, सारे अधिकारी हैं—और वहां दस मिनटों तक राष्ट्रपति बेबस बेचारे की तरह से खड़े रहें, माइक फेल कर जाए ! मैं राष्ट्रपति जी का नाम इसमें नहीं लेना चाहता हूं मैं केवल सरकार से कहना चाहता हूं कि ....

उपसभापति : आपने नाम ले लिया और कह रहे हैं कि नहीं लेना चाहता हूं What is the meaning of all this ?

राष्ट्रपति हमारे देश के गणमान्य व्यक्ति हैं, सबसे ज्यादा गणमान्य व्यक्ति हैं । आप सिर्फ माइक की बात कीजिए । राष्ट्रपति का नाम इसमें मत लाइये ।

श्री शंकर दयाल सिंह : मैं यह कहना चाहता हूं कि आखिर इसकी जवाबदेही किसकी है ? किसकी जवाबदेही थी, किसके कारण यह सब अव्यवस्था हुई, नम्बर एक ? और नम्बर दो, जानना चाहता हूं कि अगर किसी के कारण इस तरह की अव्यवस्था हुई तो उसके खिलाफ क्या कार्यवाही की गयी या किसी को इसके लिए दोषी करार दिया गया है या नहीं ? तीसरी बात मैं यह कहना चाहता हूं कि इसके लिए तीन आदमियों की हाई पावर कमेटी बनाने की क्या जरूरत थी । क्या मंत्री या विभागाध्यक्ष उसके लिए सक्षम नहीं थे कि वहीं तत्काल इस बात पर कार्यवाही करते ।

मैं समझता हूं कि इस तरह की लीपापोती अगर चलती रही तो राष्ट्र के माथे पर इस तरह का कलंक का धब्बा लगता रहेगा और हम लोग शर्म से झुकते रहेंगे तथा इस तरह के सम्पादकीय देश और विदेश में हमारे बारे में लिखे जाते रहेंगे । मैं चाहता हूं कि सरकार इसके बारे में उचित जवाब दे ।

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PERSONNEL, PUBLIC GRIEVANCES AND PENSIONS WITH ADDITIONAL CHARGE OF THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRIMATI MARGARET ALVA) : Madam, I want to say something on this.

THE DEPUTY CHAIRMAN : Yes, Mr. Gopalsamy. Mr. Gopalsamy also has permission for this. So, after he speaks, you can answer. Mr. Gopalsamy, please be brief.

SHRI V. GOPALSAMY (Tamil Nadu): Madam, the National Film Awards Function means every year awarding disrespect and insult to the dignitaries and the artistes who ought to be honoured. Every year this has become a routine recurring affairs where confusion and total mess prevail in the function. The whole country which watched the TV on the 5th evening was rudely shocked and we felt outraged when we saw what happened.

Madam, I do not want to drag in the name of the President of India. But, from the very beginning, the organizers did not obvserve the protocol when he was brought there and was asked to give away the awards.

THE DEPUTY CHAIRMAN : Mr. Gopalsamy, you don't have to mention the President. I think we have to have certain norms in the House and I cannot permit this. You may say what happened in the function; but do not bring in his name.

SHRI S. JAIPAL REDDY : Madam, the point is that the President should not be brought into any controversy. But, certainly, we can always make a reference relevant to the question.

THE DEPUTY CHAIRMAN : I had a discussion with him and Mr. Gopalsamy knows it.

SHRI V. GOPALSAMY : Madam, the Film Festival Director suddenly disappeared from the scene. The persons who are responsible for the function suddenly disappeared from the scene and they did not come to offer any apology, The Information and Broadcasting Minister did not com forward to offer any apology to the country through this Parliament. The Minister should come to the Parliament and offer an apology to the Parliament and through the Parliament to the nation. It is not a small incident and the persons or the officials concerned should be taken to task. The Minister owes an apology, an open apology to the country through the Parliament.

THE DEPUTY CHAIRMAN : Yes, Mrs. Alva.

SHRIMATI MARGARET ALVA: Madam, I do agree that what happened the other day at the Film Awards Ceremony was an unfortunate incident. There seems to have been a systems failure in the whole thing.

SHRI V. GOPALSAMY : It is the failure of the Government....*(Interruptions)*....It is the failure of the Ministry....*(Interruptions)*....

THE DEPUTY CHAIRMAN : Please let her speak.

SHRIMATI MARGARET ALVA : Madam, various Ministries and Departments have been involved in this function and it was a departmental sort of thing that was on. And, Madam, immediately thereafter, a three-member Committee was set up by the Minister to fix responsibility and find out how it happened. And the report was to be submitted within three days. Therefore, the moment the report is available to the Ministry, they will immediately take action. We cannot justify anything which has in any way caused any inconvenience to the President or reflected on the function itself. I think, two days are already over and by tomorrow the report should be with the Government, and necessary follow-up action will be taken.

SHRI V. GOPALSAMY : Will the Minister apologise ? He have apologised for the failure of the system, is my point.

SHRI S. JAIPAL REDDY: What is the difficulty in placing the report on the Table of the House ? After the report is submitted, it should be made available to us, it should be made public.

SHRIMATI MARGARET ALVA: It will be available to everybody.

श्री शंकर दयाल सिंह : लाईट फेल हो गई ··(व्यवधान)·· इसके लिए तीन आदमी

की हाई पावर कमेटी की क्या जरूरत है ? आपने किसी को सस्पेंड किया या नहीं यह मैं जानना चाहता हूं ·· (व्यवधान)

SHRI V. GOPALSAMY : Mr. Singh Deo should apologise.

THE DEPUTY CHAIRMAN : You had your say. Now, Mr. Mathur.

SHRI R. K. DHAWAN (Andhra Pradesh): This is a systems failure.

SHRI YASHWANT SINHA (Bihar): A global phenomenon.

SHRI V. GOPALSAMY : Never before had it happened like this.

THE DEPUTY CHAIRMAN : Mr. Mathur.

Strike by journalist and Non-journalist Workers of The Nav Bharat Times' (Patna) due to Non-implementation of Bachawat Commission Award

श्री जगदीश प्रसाद माथुर (उत्तर प्रदेश): श्रीमन् ·· (व्यवधान) श्रीमन् मैं मंत्री जी से कह रहा हूं आपके माध्यम से ·· (व्यवधान) आपके माध्यम से मैं संगमा जी का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं ·· (व्यवधान)

उपसभापति : यह संगमा जी नहीं हैं । ·· (व्यवधान)

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : सॉरी, थुंगन जी ।

उपसभापति : माथुर साहब, आज इतना पानी बहा इस हाउस में तब भी आप नहीं पहचाने कि यह पानी के मंत्री हैं ।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : सब इनके करे धरे पर पानी फिर गया ।

उपसभापति : आपके कहने में पानी फिर गया, क्योंकि गलत आदमी से आप कह रहे हैं ।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : मैं सरकार का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूं कि पिछली 24 तारीख से पटना से प्रकाशित होने वाले "नवभारत टाइम्स" में हड़ताल चल रही है । हड़ताल का मुख्य कारण बछावत कमीशन की रिपोर्ट को लागू न किया जाना है । कई साल हो गए जबकि बैनेट कोलमैन कंपनी ने स्वयं अन्य स्थानों पर, लखनऊ में, दिल्ली में बछावत आयोग लागू कर दिया, कोई कारण नहीं है कि वही कंपनी बछावत कमीशन "नवभारत टाइम्स" पटना के एडीशन में लागू न करे । इतना ही नहीं, जब कभी उन्होंने सवाल उठाया तो लोगों को सस्पेंड किया गया, लोगों को परेशान किया गया । नियम है कि यदि किसी यूनियन का पदाधिकारी हो, उसे किसी अन्दोलन के समय अन्यथा वैसे भी बिना किसी कारण के उसको ट्रांसफर नहीं किया जा सकता । यूनियन के जो मंत्री हैं उनको अकारण दिल्ली ट्रांसफर किया गया । लेकिन जब सवाल उठाया गया और झगड़ा हुआ तो वापस लिया गया । ऐसे ही दो कर्मचारियों को दंडित किया गया । आज भी स्थिति यह है कि यूनियन के सचिव को, वहां के संपादक को अन्दर आने की इजाजत नहीं दी जा रही है । मैं चाहूंगा कि मंत्री महोदय, खास तौर से जो लेबर से संबंधित हैं, वह इसमें हस्तक्षेप करें और जिससे कि हड़ताल बंद हो किसी समाचार पत्र का बंद होना और वह भी कर्मचारियों की जो नियमपूर्वक मांगें हैं उनके न मानने के कारण से, यह बहुत बड़ी विडंबना है । मैं चाहूंगा कि केन्द्रीय सरकार भी वहां पर हस्तक्षेप करे, क्योंकि मुख्यमंत्री कुछ इफैक्टिव नहीं हो रहे हैं । वहां के मंत्री महोदय ने भी मुख्यमंत्री को चिट्ठी लिखी थी, लेकिन उसका कोई असर नहीं । इसका ऐसा लगता है कि या तो यूनियन के लोगों से वहां की सरकार नाराज है, अथवा कुछ ढुलमुल है । इसलिए केन्द्रीय सरकार को इस सिलसिले में कुछ कहना चाहिए, जिससे कि जल्दी से जल्दी हड़ताल समाप्त हो और बछावत कमीशन को लागू किया जाए ।

SHRI YASHWANT SINHA (Bihar): Madam, I would like to associate